स्नेहा सिंह

नोएडा, उत्तर प्रदेश

पुनर्मिलन

बस एक जोरदार झटके के साथ रुकी। बस के रुकते ही पसीने से लथपथ एक युवती बस में चढ़ी। अचानक अविनाश की नजर उस पर पड़ी तो वह चौंक। यह तो आरती है? यह यहां कहां? भीषण गर्मी और बस में भीड़ इतनी थी कि अविनाश आरती से बात करने के बारे में सोच ही रहा था कि तभी अगले स्टेशन पर वह उतर गई। आरती से बात न कर पाने की वजह से अविनाश उदास हो गया।

अगले दिन भी उसी समय, उसी बस में आरती फिर से बस में चढ़ी। अविनाश पीछे था और उस दिन भी बस में वैसी ही भीड़ थी। उस दिन भी वह आरती से बात नहीं कर सका।

दो दिन लगातार आरती को देखने और बात न होने के कारण तीसरे दिन अविनाश ने जल्दी आकर बस में अपने पास की एक सीट रोक ली। आरती बस में चढ़ी और खाली सीट देख कर वह वहां बैठ गई। अविनाश को देखकर वह सकुचाई, "तुम?"

अविनाश ने चैन की सांस ली।

थोड़ी देर चुप रहने के बाद अविनाश बोला, "तुम, सारी, आप बहुत बदल गई हैं।"

"हां, समय बड़े–बड़ों को बदल देता है।"

"मतलब, आप खुश तो हैं न?"

आरती के पास अविनाश की बात का कोई जवाब नहीं था। बस, आंखों से आंसू टपक पड़े। इतने में स्टाप आ जाने के कारण आरती बस से नीचे उतर गई। अविनाश भी उसके साथ बस से उतरा और आवाज, "आरती... आरती।"

आरती उतावल में तेज कदमों से चलने लगी। अविनाश उसके पीछे–पीछे चल रहा था। अविनाश ने उसे रोक लिया और पास के गार्डन में ले जाकर एक बेंच पर बैठ गया। फिर अविनाश ने आरती से पूछा, "लगता है, आप खुश नहीं हैं?"

"अविनाश, मुझे माफ़ कर दो। तुम्हें छोड़कर मैंने बहुत बड़ी गलती की थी।

"मतलब? आकाश और आप अब साथ नहीं रहते?"

"नहीं, आकाश अब इस दुनिया में नहीं है। हमारी एक तीन साल की बेटी है गरिमा। मैं उसी को लेकर अकेली रहती हूं।"

"ओह, यह सब कैसे हुआ?"

"मैंने आकाश से प्यार करके बड़ी गलती की। समय के साथ मुझे अपनी गलती का अहसास हुआ। मैं फिलहाल एक कंपनी में नौकरी करती हूं।"

अविनाश को अब उसके आंसू पोंछने का तो हक नहीं था, लेकिन इतना जरूर कहा, "मेरी किसी मदद की जरूरत हो तो जरूर कहना।"

अविनाश ने अपना मोबाइल नंबर दिया और दोनों अपने–अपने घर चले गए। आरती तो चली गई लेकिन अविनाश अपने अतीत में खो गया।

रामनगर में अविनाश अपने माता–पिता के साथ रहता था। पिता के पास जमीन थी, इसलिए वह खेती करते थे। लेकिन अविनाश बीएड करके एक सरकारी स्कूल में अध्यापक हो

गया था। उसके मामा ने उसके लिए एक लड़की देखी थी, जिसका नाम आरती था। सुंदर आरती को देखकर अविनाश ने पहली नजर में ही शादी के लिए हां कह दिया था। सिर्फ एक ही बार दोनों के बीच बातचीत हुई थी। उसके बाद शादी हो गई थी।

शुरुआत में सब ठीक चला। लेकिन आरती को हमेशा अविनाश से शिकायत रहती कि वह सीधा–साधा है, कभी घुमाने नहीं ले जाता। आरती को अब घर, घर के काम बोझ लगने लगे थे। शौकीन आरती रोज ऑनलाइन आर्डर करके नए–नए कपड़े मंगवाती थी। घर के काम भी अविनाश की मां ही करती थीं, वह खुद पूरा दिन बस मोबाइल लेकर बैठी रहती। रात होने पर अविनाश को प्यार करने के बजाय उसके साथ झगड़ा करती। उसे दकियानूसी, किताबी कीड़ा, कंजूस कहकर नीचा दिखाती। अविनाश कई बार आरती को प्यार से समझाने की कोशिश करता, लेकिन वह बिलकुल नीरस है, ऐसा कहकर आरती करवट बदलकर सो जाती।

अविनाश धैर्य रखकर जीवन जी रहा था। कुछ समय से वह देख रहा था कि आरती रात को देर तक मोबाइल पर किसी से बात करती है और चैट करती है। रोज के नियम के अनुसार सवेरे अविनाश उठा और देखा तो आरती नहीं थी। उसने घर में, आंगन में देखा, लेकिन आरती कहीं नहीं थी। अचानक उसकी नजर टेबल पर पड़ी। एक चिट्ठी रखी थी। अविनाश ने वह चिट्ठी पढ़ी तो वह दंग रह गया। उसमें लिखा था, "अविनाश, मैं आपको और इस घर को छोड़कर जा रही हूं। मैंने अपने जीवन में जैसे पति की कल्पना की थी, आप उसके एक प्रतिशत भी नहीं हैं। मुझे आकाश से प्यार हो गया है और मैं उसके साथ जीवन बिताने के लिए तुम्हें छोड़कर जा रही हूं।– आरती।"

अविनाश के हाथ से चिट्ठी छूट कर गिर गई। शादी को सिर्फ दो ही महीने हुए थे और आरती घर छोड़कर चली गई। बस, इसके बाद तो अविनाश ने कभी आरती को ढूंढने का प्रयास नहीं किया। मन न होने के बावजूद कुछ ही समय में माता–पिता की जिद के कारण अविनाश ने ममता से शादी कर ली। सादी–सीधी ममता ने अविनाश को भरपूर प्यार दिया। अविनाश आरती को भूल गया। एक के बाद एक पहले मां और फिर पिता का निधन हो गया, लेकिन ममता ने अविनाश को संभाल लिया। आखिरकार ममता गर्भवती हुई तो दोनों खुश हुए। अविनाश ममता की बहुत देखभाल करता था, लेकिन शायद ईश्वर को उसकी खुशी मंज़ूर नहीं थी। एक बेटे को जन्म देकर ममता अविनाश और छोटे बच्चे को छोड़कर हमेशा के लिए इस दुनिया से चली गई।

आरती के धोखे से उबरकर ममता के साथ अविनाश खुश रहने लगा था, लेकिन अब छोटे बेटे की ज़िम्मेदारी भी आ पड़ी थी। अविनाश अकेले दम पर छोटे वेद की परवरिश करने लगा था। वेद स्कूल जाने लगा है। अचानक फेरीवाले की आवाज से अविनाश अतीत से लौटा। आरती का चेहरा फिर से उसकी आंखों के सामने तैरने लगा।

आरती ने बताया था, "मैं घर छोड़कर चली गई और आकाश के साथ उसके घर रहने लगी। हमने मंदिर में शादी कर ली थी। धीरे–धीरे आकाश का असली रंग सामने आने लगा था। वह एक मॉल में मामूली नौकरी करता था। कभी–कभी शराब पीकर आता और मेरे शरीर को नोच डालता। शुरुआत में मैं इसे प्यार समझती थी, लेकिन समय बीतने के साथ हमारे बीच झगड़े होने लगे। मुझे पता चला कि मैं गर्भवती हूं। मुझे लगता था कि शायद आकाश सुधर जाएगा, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। गरिमा का जन्म हुआ। सिर्फ दो दिन ही हुए थे कि आकाश मेरे शरीर पर टूट पड़ा। मैं कराहती रही, विरोध करती रही, लेकिन वह नहीं माना। उसने जोर से मुझे धक्का दिया और गुस्से में घर से चला गया। खूब शराब पी और घर आते समय ट्रक से दुर्घटना में उसकी मौत हो गई। फिर मैं गरिमा को लेकर हरिद्वार आ गई और नौकरी करने लगी।"

आरती ने दोनों हाथ जोड़कर अविनाश से माफी मांगी। इतने में गरिमा और वेद आ गए।

"पापा, देखो न इस गरिमा ने मुझे मारा है।"

"मम्मी, देखो न इस वेद ने मुझे झूले से नीचे गिरा दिया।"

दोनों झगड़ते देख अविनाश और आरती एक–दूसरे को देखने लगे। आरती और अविनाश हंसने लगे। वेद और गरिमा दोबारा खेलने चले गए तो आरती ने कहा, "अविनाश, आपकी पत्नी का नाम क्या है?" आंखों में गहरी उदासी के साथ अविनाश बोला, "ममता, लेकिन अब वह इस दुनिया में नहीं है।"

"क्या?'

:हां, आपके जाने के बाद मां की इच्छा का मान रखते हुए मैंने ममता से शादी की थी। ममता बहुत सरल और हंसमुख थी, लेकिन शायद ईश्वर को हमारा सुख मंज़ूर नहीं था। वेद को जन्म देकर ममता इस हमें बेसहारा छोड़कर इस दुनिया से चली गई।"

दोनों की बातें चल रही थीं कि इतने में दोनों बच्चे फिर आ गए।

"चलो वेद अब घर चलते हैं। आरती अब हम चलेंगे।"

उस रात अविनाश वेद को सुला रहा था। उस समय उसके विचारों में बस आरती थी। अचानक वेद बोला, "पापा, एक बात कहूं?"

"हां, बोलो बेटा।"

"पापा, गरिमा और वह आंटी हमारे साथ नहीं रह सकतीं?'

वेद की बात सुनकर अविनाश मौन हो गया। वेद को क्या जवाब दे, वह समझ नहीं पाया। वह बोला, "बेटा, बहुत देर हो गई है, अब सो जाओ, नहीं तो कल स्कूल जाने में देर हो जाएगी।"

वेद तो सो गया, लेकिन वेद के उस सवाल ने अविनाश को सोचने पर मजबूर कर दिया।

एक हफ्ता बीत गया। फिर सभी गरिमा के जन्मदिन पर मिले। उसी समय वेद ने कहा, "आंटी आप और गरिमा हम सब साथ रहें तो। मुझे तो पूरा दिन गरिमा के साथ खेलने को मिलेगा।"

गरिमा ने भी वेद की बात में हामी भरी। गरिमा और वेद की बात सुनकर आरती और अविनाश क्या बोलें, यह समझ नहीं पाए। इतना बोलकर वेद और गरिमा तो खेलने में मस्त हो गए।

"आरती, गरिमा ने जो कहा उसके बारे में आप क्या सोचती हो?'

आरती थोड़ी देर कुछ नहीं बोली, तो अविनाश को लगा कि उसने बोलने में शायद जल्दबाजी कर दी है। तभी हंसते हुए आरती अविनाश से लिपट गई। अविनाश ने भी आरती को बांहों में समेट लिया। रात होते ही सब घर जाने के लिए निकले। बच्चे बहुत थक गए थे, इसलिए कार में पीछे बैठ गए। आरती अविनाश के साथ आगे बैठी।

कार में एक बहुत ही सुंदर गाना बज रहा था, "ज़िंदगी के सफ़र में गुजर जाते हैं जो मकाम..."

अविनाश ने आरती के घर के पास कार रोकी। "अविनाश, क्या हम अपने घर चलेंगे?" आरती ने इतना कह कर अपना सिर अविनाश के कंधे पर टिका दिया।